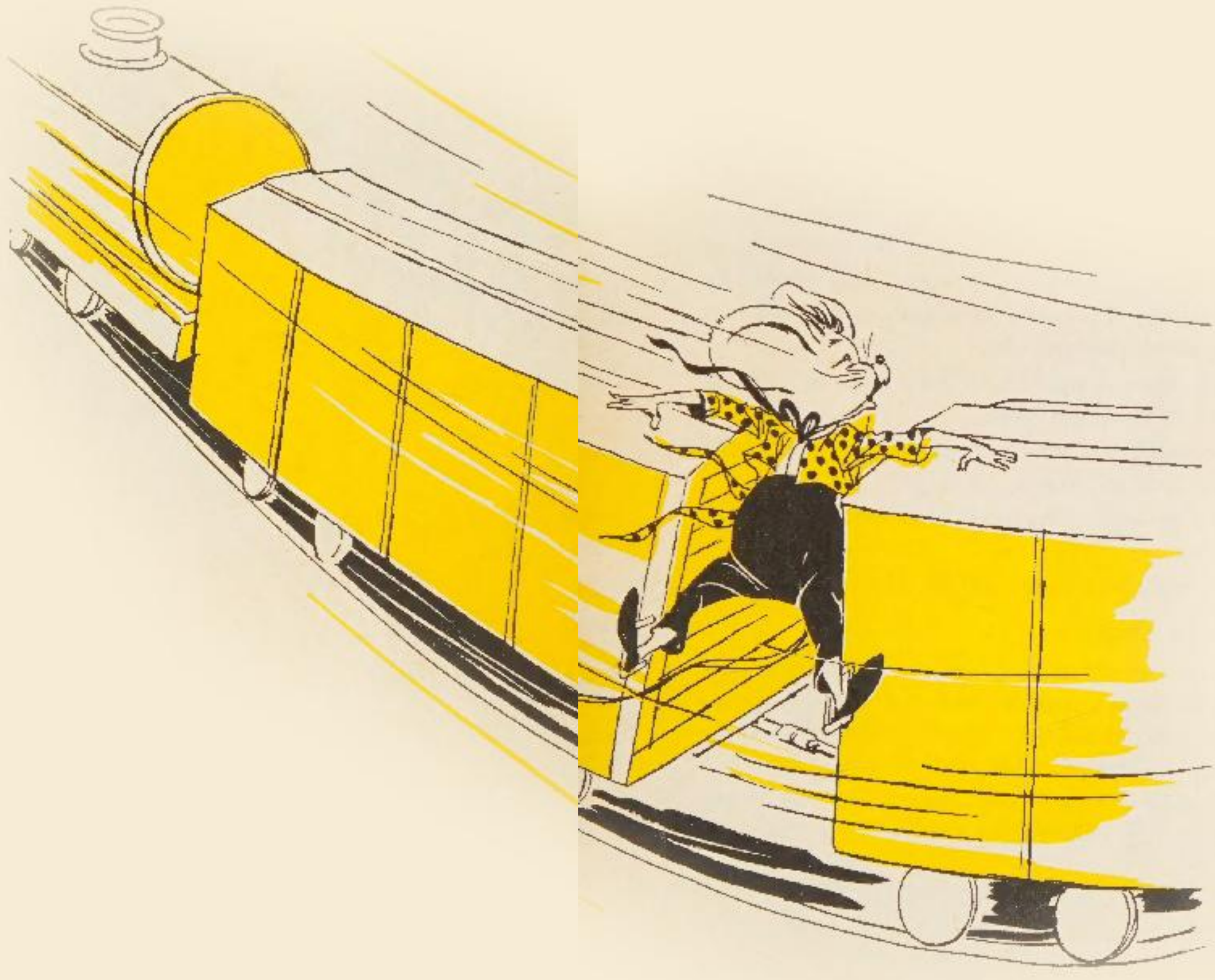
छोटा सुरमई चूहा और रेलगाड़ी

लेखनः सारा एशरॉन

चित्रः क्लॉडीन नैनकिवल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा





छोटा सुरमई चूहा और रेलगाड़ी

लेखनः सारा एशरॉन

चित्रः क्लॉडीन नैनकिवल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

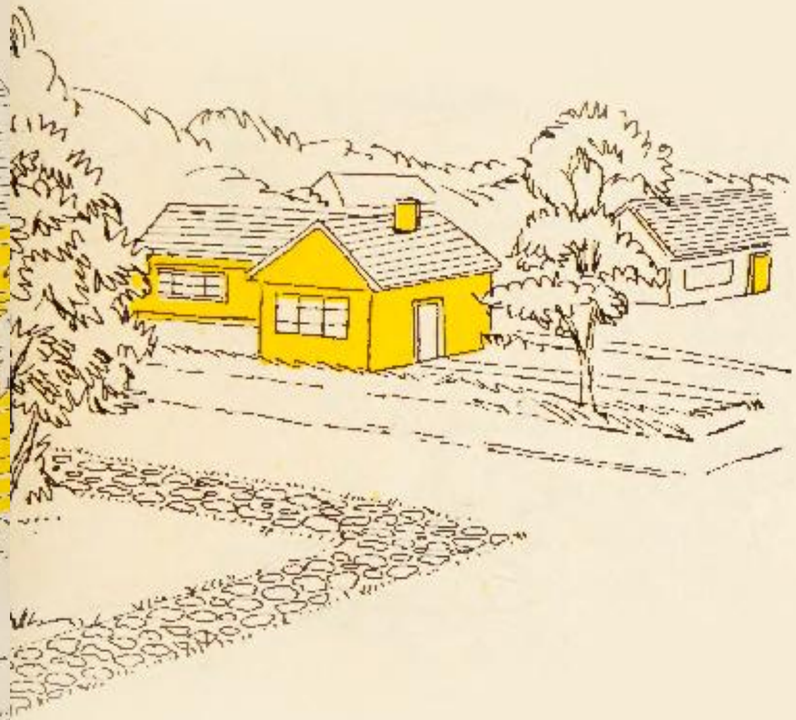




छोटा सुरमई चूहा
उदास था।
“मुझे भला हुआ क्या है?”
उसने खुद से कहा।



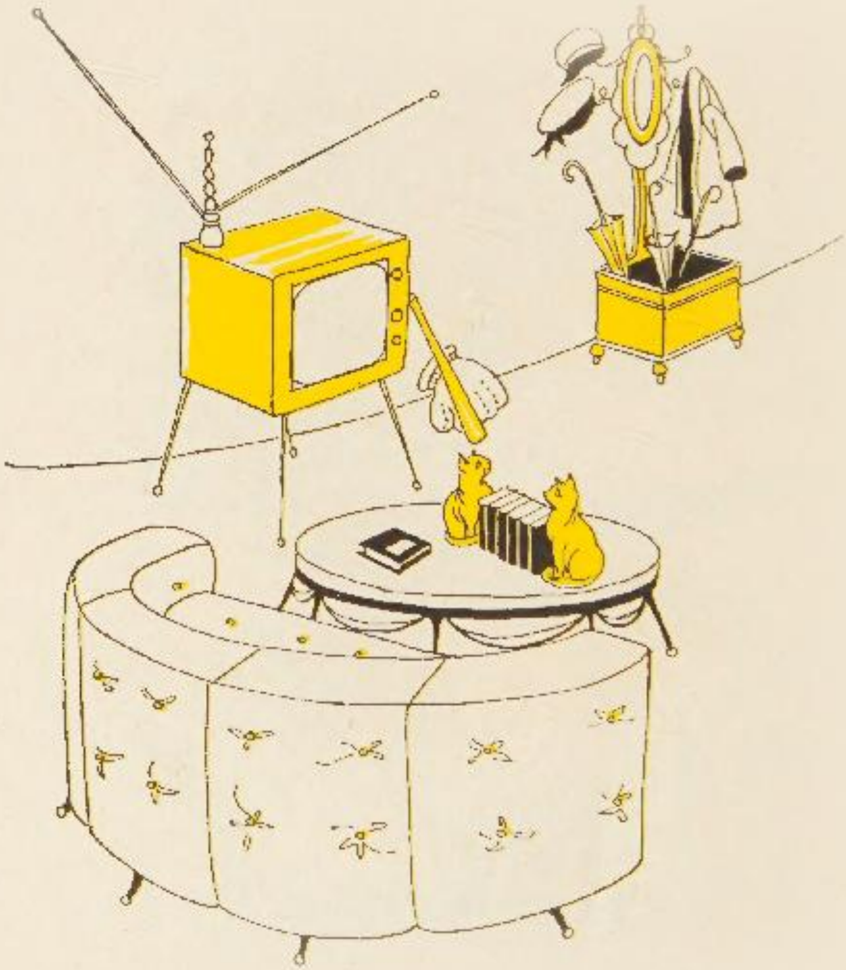
उसने अपने आजू-बाजू देखा।
''मैं इस सड़क के सबसे बढ़िया
घर में रहता हूँ,'' उसने कहा।



''मुझे यह घर पसन्द है।''

उसने फिर इधर-उधर देखा।

"दीवार में मेरा एक छोटा-सा
चूहा घर है," वह बोला।





"मुझे मेरा चूहा घर पसन्द है।"

"मेरे पास खाने को अच्छी चीज़ें हैं,"
छोटे सुरमई चूहे ने कहा।
"केक के कतरे,
डबलरोटी के कतरे,
जैम के कतरे ...।"





उस घर में एक लड़का रहता था।
''मुझे वह लड़का पसन्द है,''
चूहे ने खुद से कहा।
वहाँ एक छोटी लड़की भी रहती थी।
''मुझे वह छोटी लड़की भी पसन्द है,''
चूहे ने कहा।
''और उनके माँ और पिता भी।''

बगल वाले घर में एक बिल्ली रहती थी।
पर उसके गले में एक घंटी थी।
छोटा सुरमई चूहा
उस बिल्ली से डरता नहीं था।

''मुझे हुआ क्या है?''
छोटे सुरमई चूहे ने खुद से फिर पूछा।
''मैं इतना उदास क्यों हूँ?
आख़िर मुझे चाहिए क्या?''



एक दिन छोटा सुरमई चूहा
सीढ़ियों से नीचे दौड़ा।
वह खाने को कुछ लाने
नीचे दौड़ा।



तब एक अचरज की बात घटी।





वहाँ नीचे एक छोटा-सा भूरा चूहा था।

''हलो,'' उस छोटे

भूरे चूहे ने कहा।

''मेरा नाम स्क्वीकी है।''

''हलो, स्क्वीकी,''

छोटे सुरमई चूहे ने पलट कर कहा।

''मैं एक नया घर तलाश रहा हूँ,''

स्क्वीकी ने बताया।

''क्या तुम्हें यहाँ रहना अच्छा लगता है?''



''हाँ,'' सुरमई चूहे ने कहा।

''यह घर तो बहुत ही अच्छा है।

यहाँ एक लड़का है

और एक लड़की,

एक पिता है,

और एक माँ।

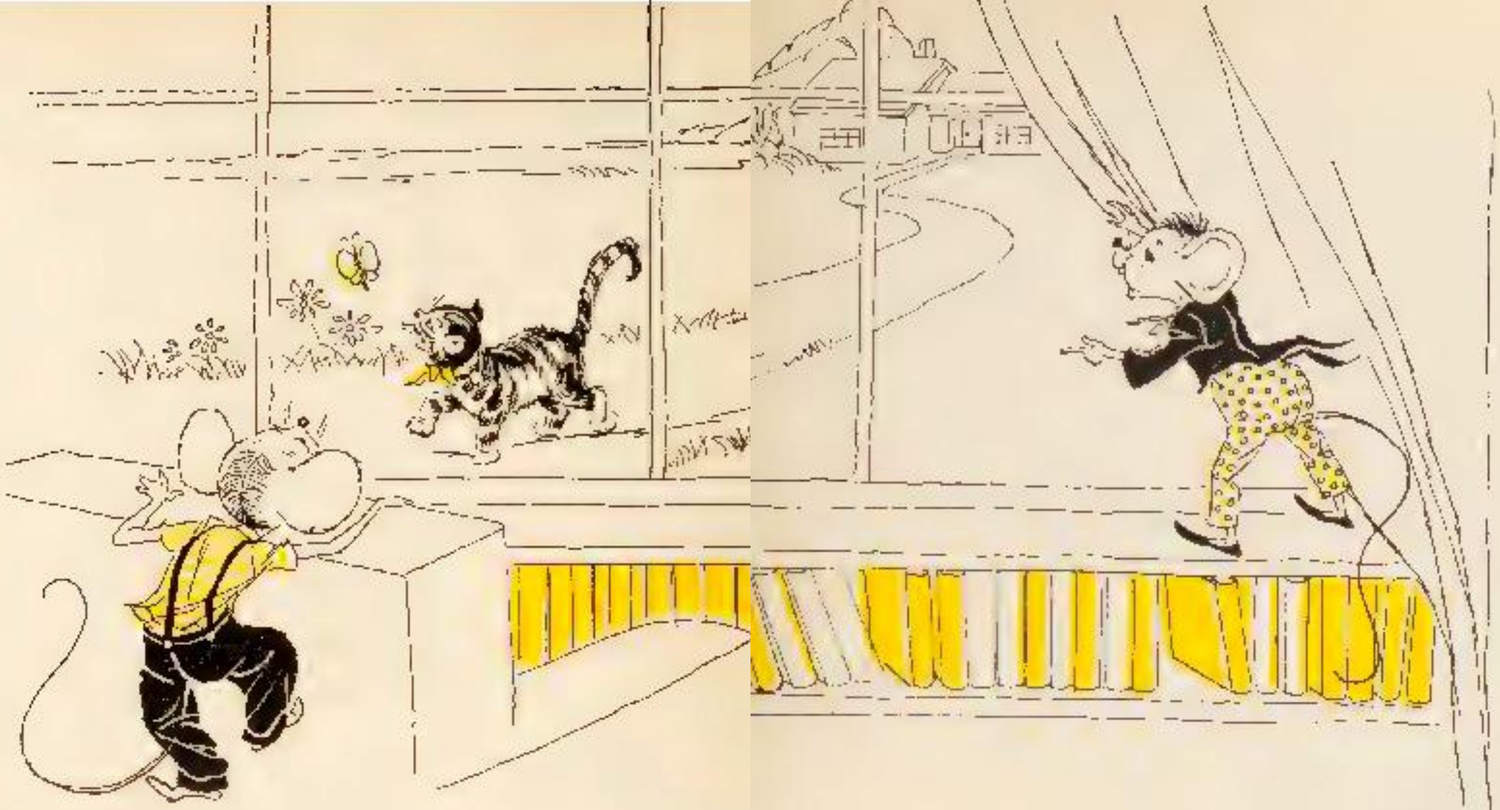
और वे सब शान्त लोग हैं।''



''बढ़िया!'' स्क्वीकी ने कहा।

''मुझे शान्त लोग अच्छे लगते हैं।''





"क्या यहाँ बिल्लियाँ हैं?"
स्क्वीकी ने पूछा।
"मेरे पुराने घर में
बहुत ही ज़्यादा बिल्लियाँ रहती हैं!"

"पड़ौस के घर में एक बिल्ली रहती है,"
छोटे सुरमई चूहे ने कहा।
"पर उसके गले में एक घंटी बंधी है।"

"बढ़िया!" स्क्वीकी बोला।
"मुझे घंटी वाली बिल्लियाँ अच्छी लगती हैं!"

''मैं ऊपर लड़के के कमरे में रहता हूँ,''
छोटे सुरमई चूहे ने कहा।
''चलो, चल कर देखो।''

वे ऊपर लड़के के कमरे में गए।
''देखो,'' सुरमई चूहे ने कहा।
''मैं यहाँ रहता हूँ . . .।



''और वहाँ कमरे के उस दूसरे छोर पर
एक और चूहा घर है।''

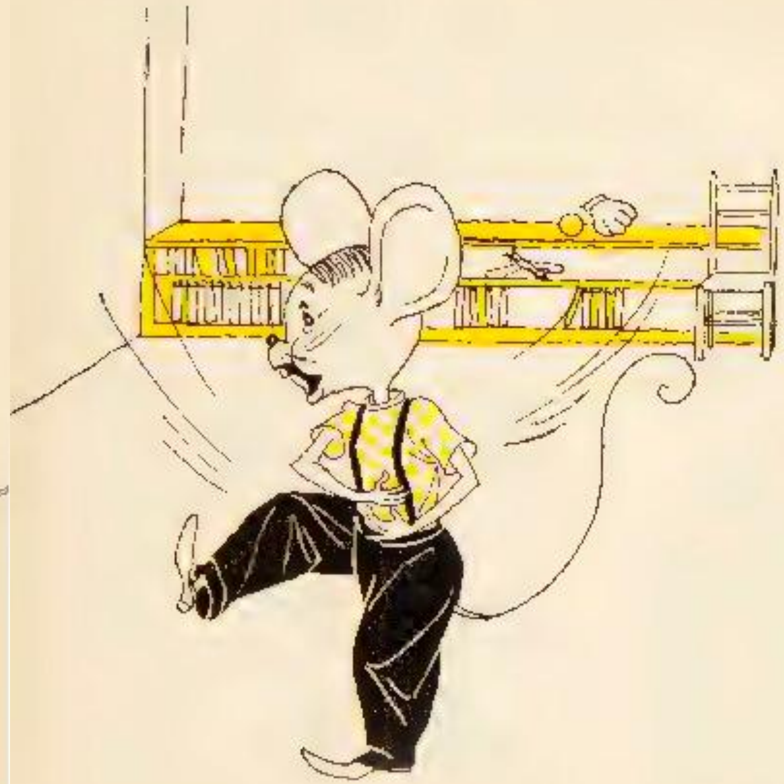
''लड़के के कमरे में?'' स्क्वीकी ने पूछा।
और मुँह बिचकाया।



"अरे, यह लड़का बाहर जा पूरे दिन खेलता है," सुरमई चूहे ने बताया।

"और वह यहाँ अच्छी-अच्छी चीज़ें खाता है।
मुझे यहाँ
केक के कतरे
और मीठी गोलियों के कतरे
और जैली लगी डबलरोटी के कतरे मिलते हैं।"





"स्वादिष्ट!" स्क्वीकी ने कहा।
"फिर तो यह मेरे लिए एकदम सही जगह है!"

सो स्क्वीकी कमरे के
दूसरे छोर वाले अच्छे से चूहा घर में
रहने चला आया।



अब छोटे सुरमई चूहे के पास
खेलने को कोई था।
अब उसे उदासी नहीं लग रही थी।
“मुझे बस एक दोस्त की ज़रूरत थी,”
उसने खुद से कहा।
“तो मुझे यही कमी सता रही थी!”



दोनों चूहा दोस्त खूब मज़ा करने लगे।
लड़का हर दिन खेलने
भाग जाता।

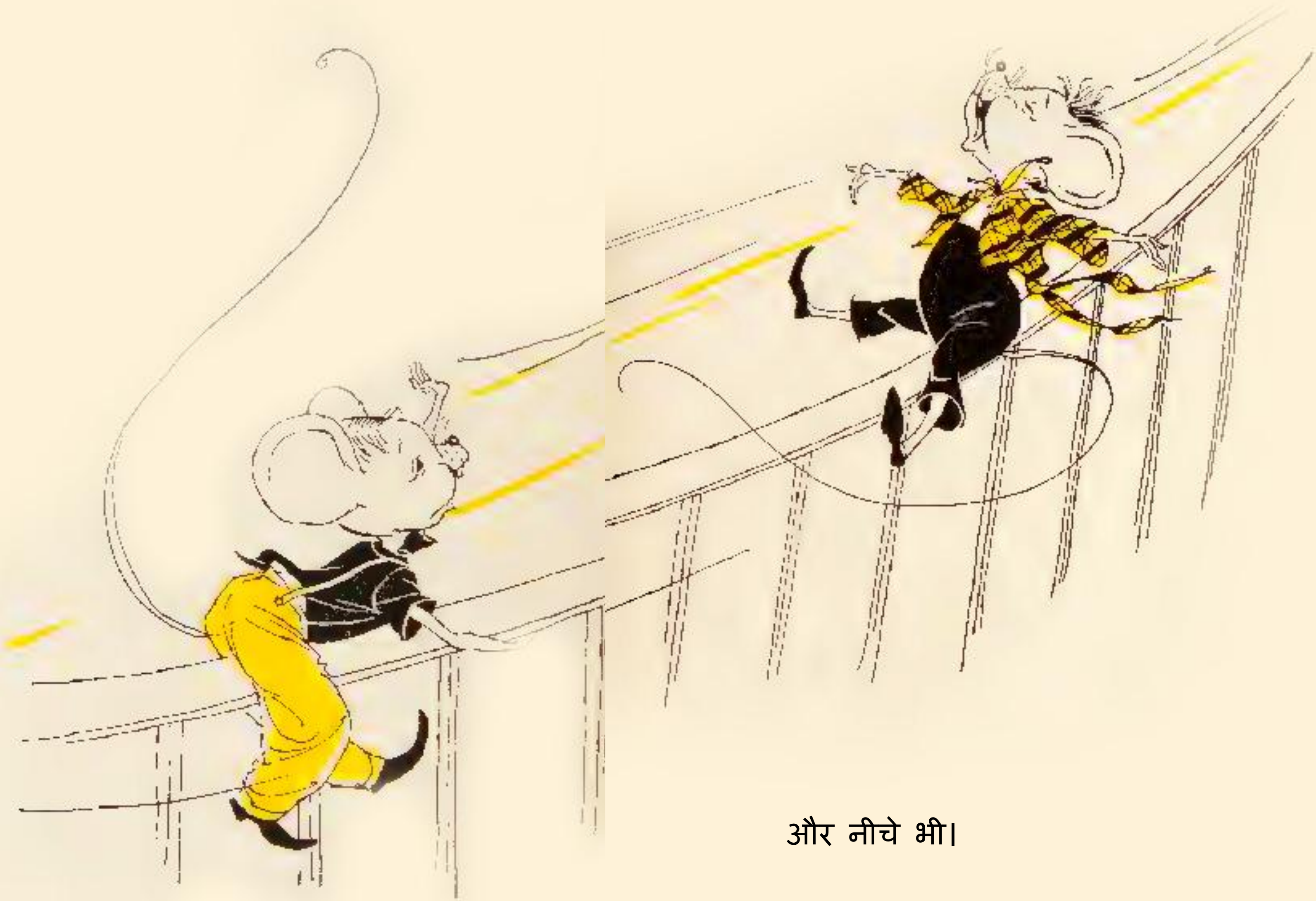


तब स्क्वीकी और
छोटा सुरमई चूहा
खेलने बाहर दौड़ते।



वे लड़के के कमरे
में खेलते
यहाँ और वहाँ।

वे ऊपर खेलते



और नीचे भी।



कभी स्वीकी कमरे के उस छोर
खाना खाने
छोटे सुरमई चूहे के पास दौड़ता।

तो कभी सुरमई चूहा दौड़ कर
कमरे के दूसरे छोर स्क्वीकी के
साथ खाना खाने जाता।
सुरमई चूहे को यही सबसे अच्छा लगता था।







एक दिन कुछ लड़के और लड़कियाँ
उस घर में आए।
ढ़ेरों लड़के और लड़कियाँ!

“यहाँ हो क्या रहा है?”
स्क्वीकी ने पूछा।
पर छोटे सुरमई चूहे को कुछ पता ही नहीं था।



बच्चे खाना खाने बैठे।

उन्होंने केक और मीठी गोलियाँ खाईं।



यही सब सुरमई चूहे ने खाया

और स्क्वीकी ने भी।

इसके बाद बच्चों ने खेल खेले।

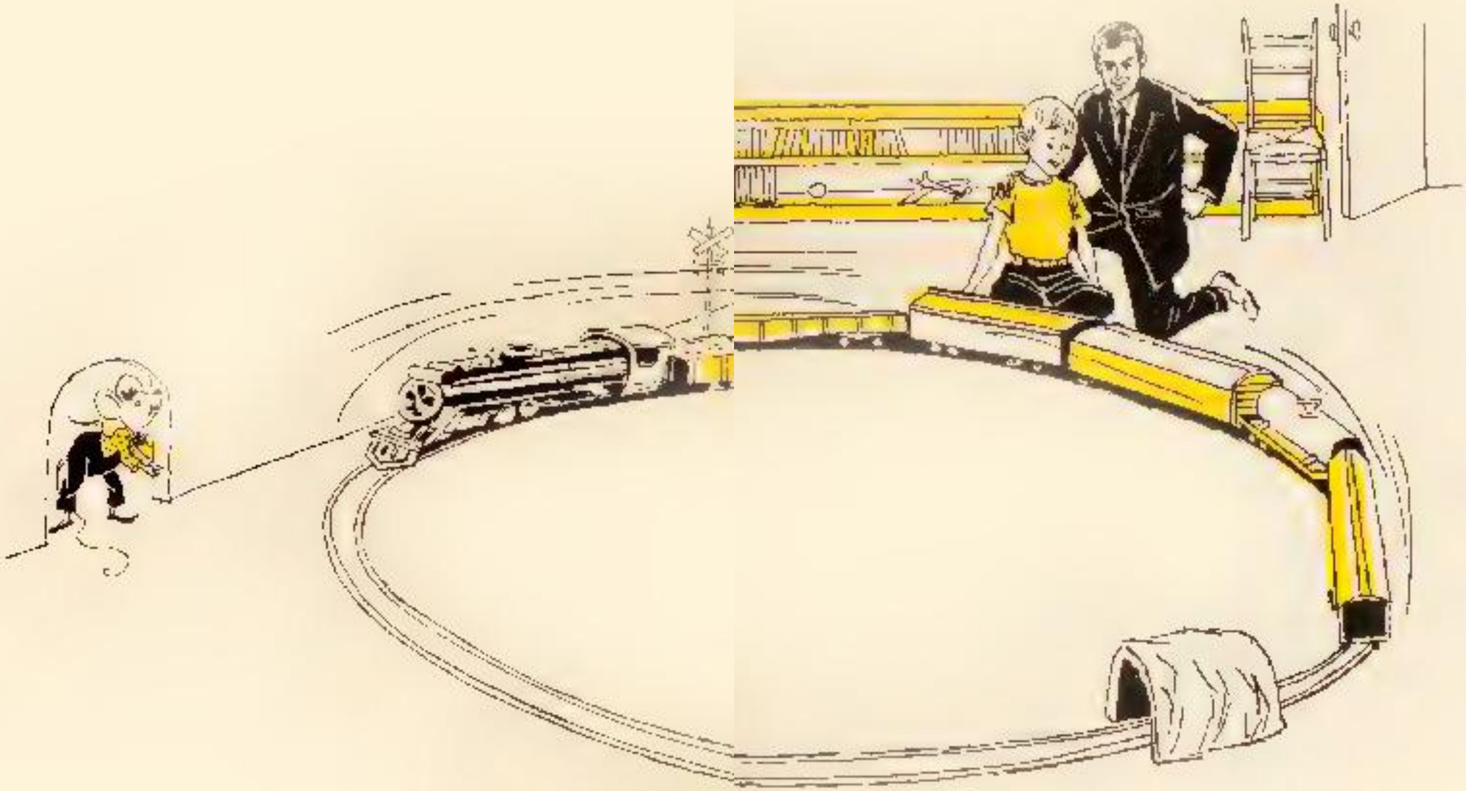
यह भला हो क्या रहा था?
स्क्वीकी अपने चूहा घर में दौड़ गया।

"हो सकता है बच्चे जल्द ही
घर लौट जाएं," सुरमई चूहे ने खुद से कहा।
"हो सकता है लड़का भी खेलने
बाहर चला जाए।"





बच्चे तो कुछ देर बाद
अपने-अपने घर चले गए।
पर लड़का बाहर
खेलने नहीं गया।



वह ऊपर अपने कमरे में आया।

उसके पिता भी उसके साथ आए।

तब लड़के और उसके पिता ने

रेलगाड़ी के साथ खेलना शुरू किया।

उन्होंने रेलगाड़ी का भोंपू बजाया।

पैंपैं!

पैंपैं!

उन्होंने कमरे में रेलगाड़ी को

गोल-गोल चलाया।



“हो सकता है वे जल्द ही चले जाएं,”
छोटे सुरमई चूहे ने खुद से कहा।

“दोपहर के खाने का समय हो चुका है।
कमरे के उस छोर
स्क्वीकी के घर जाने का समय हो चुका है।
मुझे देर से पहुँचने से नफ़रत है।”

पर लड़का और उसके पिता
रेलगाड़ी से खेलते, और-और खेलते गए।
तब पिता नीचे चला गया।



पर लड़का कहीं नहीं गया।

वह रेलगाड़ी के साथ खेलता रहा।

जल्द ही उसका एक दोस्त

उसके साथ खेलने आ गया।



“बेवकूफ़ लड़के!” सुरमई चूहे ने

खुद से कहा।

“बाहर जा कर खेलो।

पूरे दिन घर के अन्दर खेलना

तुम्हारे लिए अच्छा नहीं है।”

पर दोनों लड़के रेलगाड़ी से

खेलते गए।

वे रेलगाड़ी को चलाते।

तब वे उसे रोक देते।

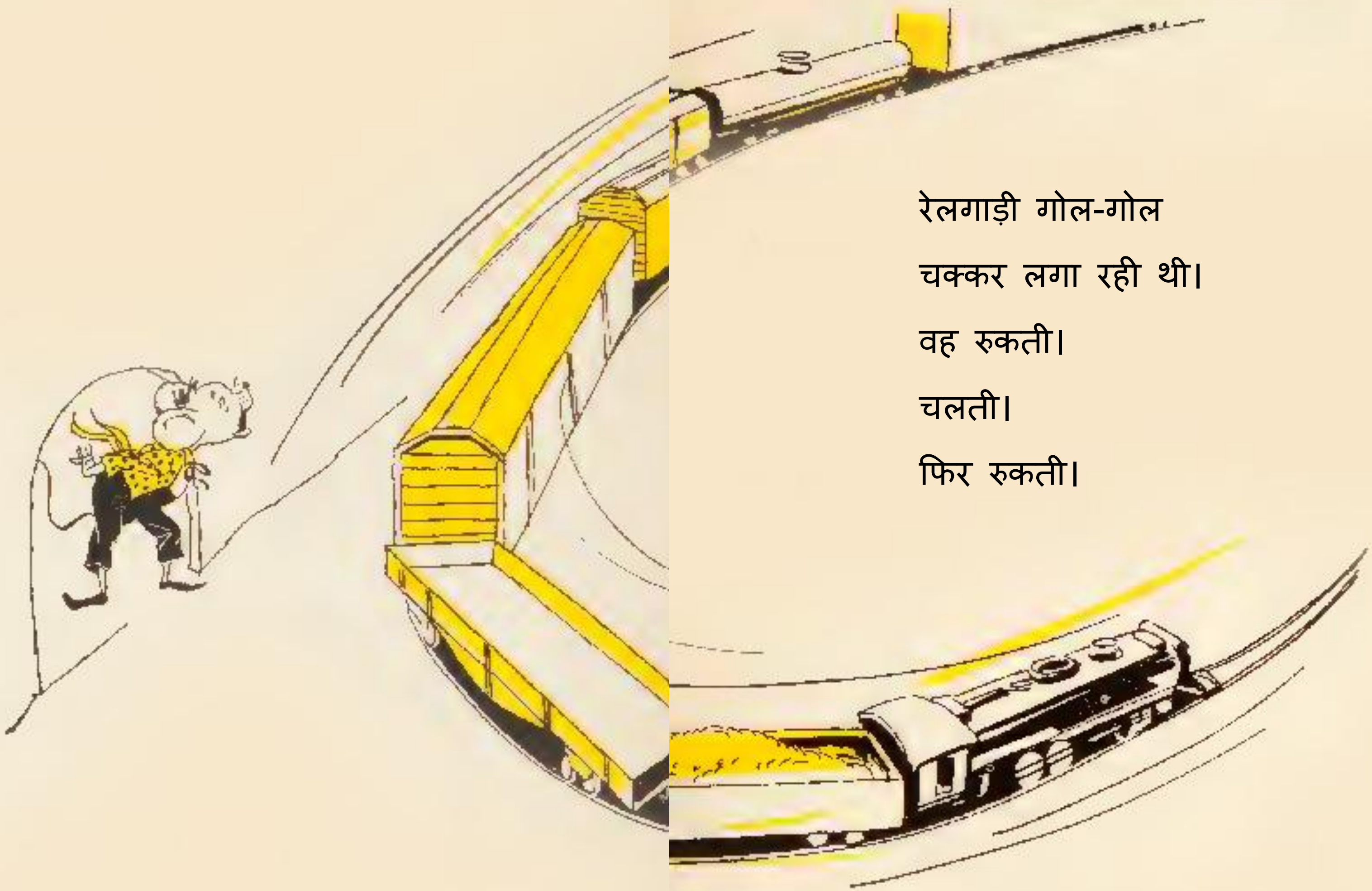
फिर चलाते।

पैंपैं!

पैंपैं!

फिर रोकते!





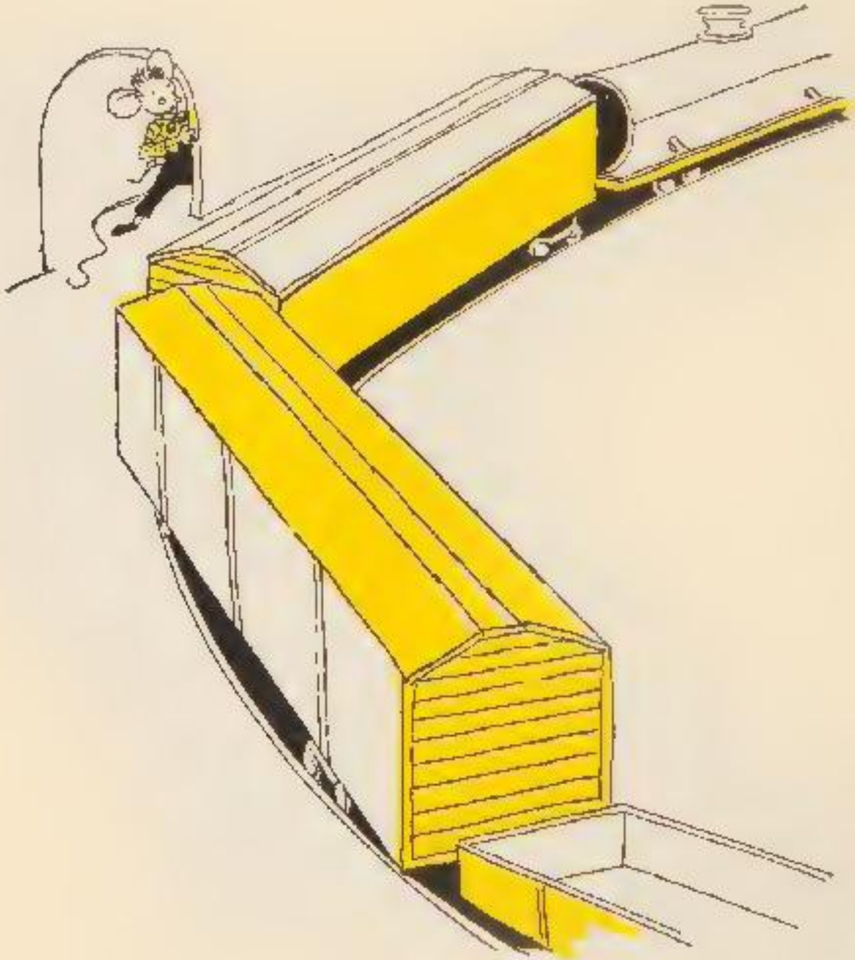
“मुझे देर से पहुँचने से सच में नफ़रत है,”
छोटे सुरमई चूहे ने कहा।
तब उसने बाहर उस छोटी रेलगाड़ी को देखा।

रेलगाड़ी गोल-गोल
चक्कर लगा रही थी।
वह रुकती।
चलती।
फिर रुकती।

रेलगाड़ी चक्कर लगाती रही।

तब वह रुकी

ठीक उसके चूहा घर के सामने!

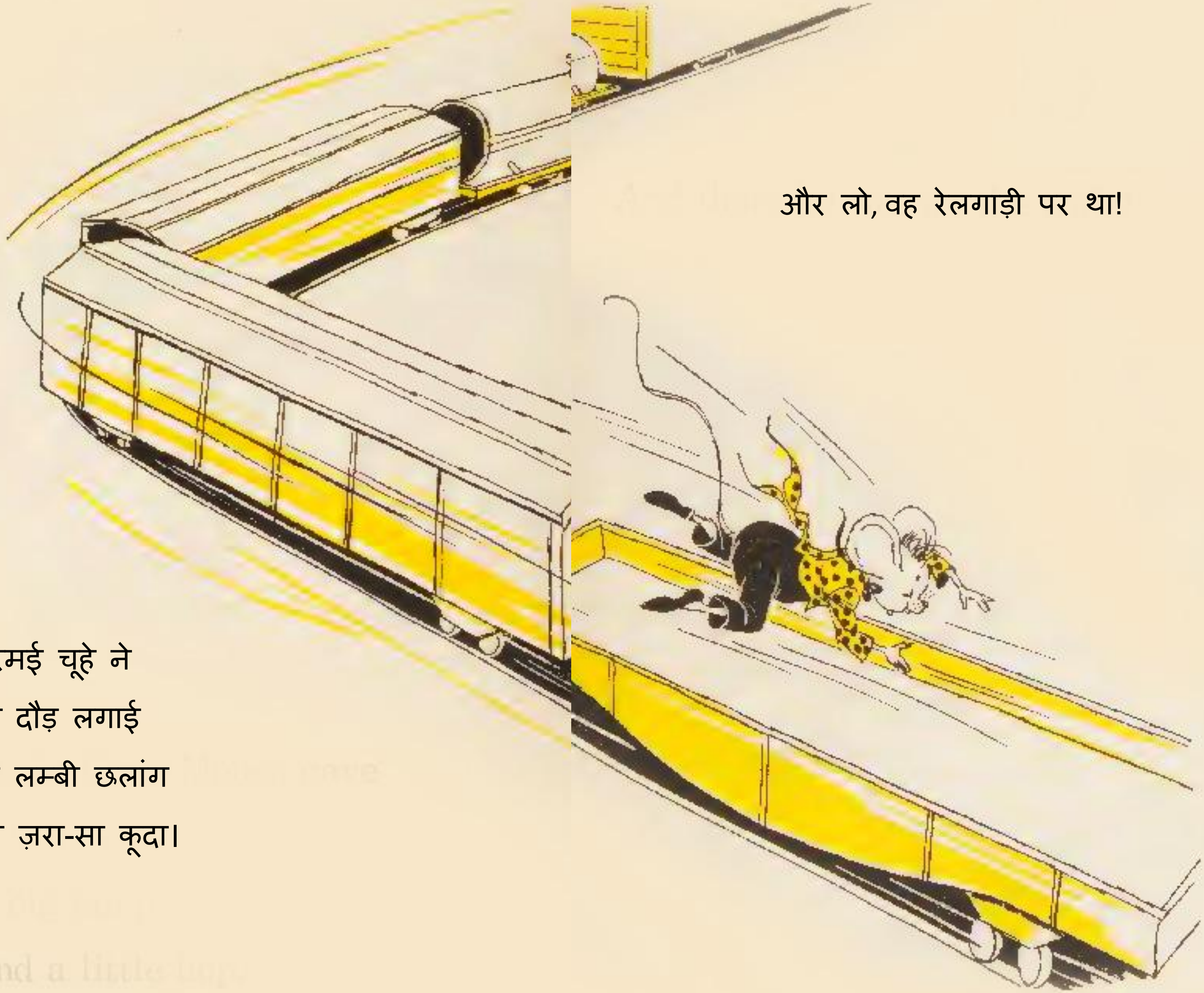




“ओह!” छोटे सुरमई चूहे ने कहा।

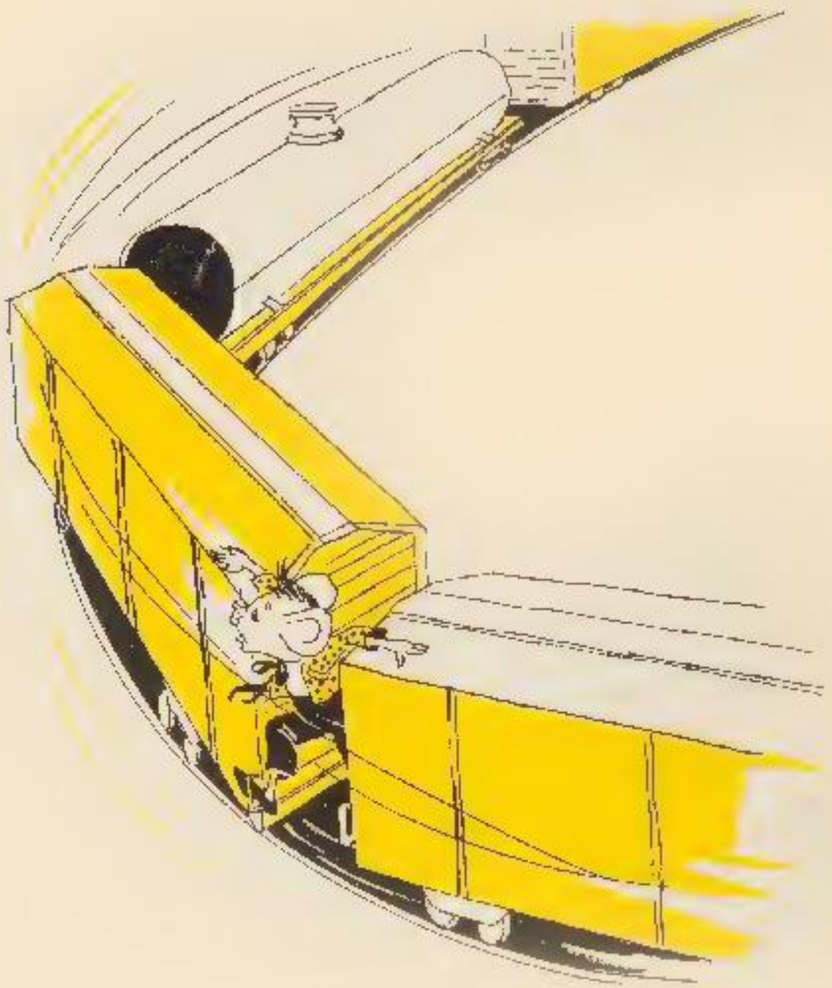
“मुझे समझ आ गया है

कि मैं क्या कर सकता हूँ!”



छोटे सुरमई चूहे ने
छोटी-सी दौड़ लगाई
तब एक लम्बी छलांग
और तब ज़रा-सा कूदा।

और लो, वह रेलगाड़ी पर था!



वह फुर्ती से रेलगाड़ी के
एक डब्बे में जा घुसा।

उस डब्बे का एक दरवाज़ा था।

सुरमई चूहे ने डब्बे में
खुद को सिकोड़ कर छोटा कर लिया।



पैंपैं!

पैंपैं!

रेलगाड़ी चलने लगी।

सुरमई चूहे को थोड़ा डर लगा।

पर तब उसे मज़ा आने लगा।

रुकना।

चलना।

पैंपैं!

पैंपैं!



आख़िरकार रेलगाड़ी रुकी।
छोटे सुरमई चूहे ने बाहर देखा।
वह स्क्वीकी के घर के पास था।

उसने इधर-उधर ताका।
लड़कों ने उसे देखा ही नहीं था।
उसने छोटी-सी दौड़ लगाई
तब एक लम्बी छालांग
और तब ज़रा-सा कूदा।





स्क्वीकी को अचरज हुआ।
उसके सामने छोटा सुरमई चूहा जो था।
वह अंत-तंत दोपहरी के खाने के लिए आ गया था।

''मुझे देर से पहुँचने से नफ़रत है,''
छोटे सुरमई चूहे ने कहा।
''सो आज मुझे रेलगाड़ी से आना पड़ा।

